मूल गीतांजलि

(बांग्ला से भोजपुरी में अनुवाद)

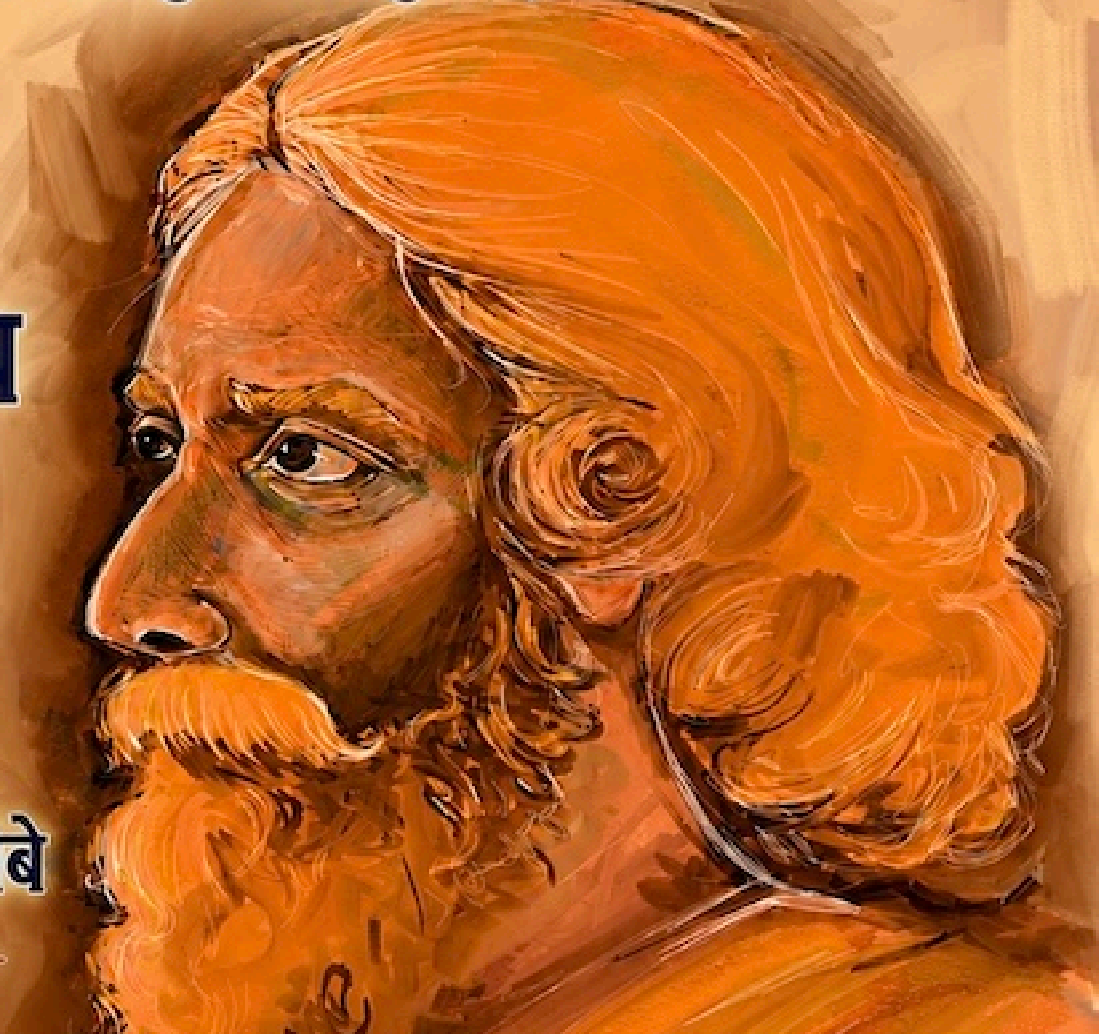

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

अनुवादः
डॉ. ऋषि भूषण चौबे

भोजपुरी में विश्व क्लासिक अनुवाद सीरीज के अंतर्गत

भोजपुरी में विश्व क्लासिक अनुवाद सीरीज के अंतर्गत

नोबेल पुरस्कार प्राप्ति के 113 बरिस बाद गुरुदेव रवीन्द्रनाथ (ठाकुर) टैगोर के विश्व प्रसिद्ध काव्य कृति

गीतांजलि

(बांग्ला से भोजपुरी अनुवाद)

रवींद्रनाथ ठाकुर

अनुवाद: **डॉ. ऋषि भूषण चौबे**

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2026

© डॉ. ऋषि भूषण चौबे

ISBN: 978-81-69538-57-2

आवरण चित्र: कार्तिक बाँसफ़ोर

पिता की स्मृति को

जिनके आशीर्वाद

की ज़रूरत सदा बनी रहेगी!

अनुक्रम

आपन बात	12
1. प्रभु हम माथा झुकावल चाहऽ तानी	20
2. हम नाना वासना में डूबल रहे वाला हईं	22
3. कातना अनजान लोगन से	24
4. बिपत में तू हमार रक्षा करऽ	26
5. हमार भीतरी मन बिकसित होखो	28
6. प्रेम, प्राण, गीत, गंध	30
7. तू नीत नया रूप में आवऽ हमार जीवन में	32
8. धान के खेत में, धूप छाँह में	34
9. आनंद के सागर से	36
10. तहार सोना के थारी में सजाइब आज	38
11. हमनि के बँधनी जा काश फूल के गुच्छा	40
12. लागल साफ सफेद पाल में	43
13. हमार नयन-मोहन	45
14. हे जननी! तहार करुण-चरण के	47
15. मय संसार में, उदार सुर में	48
16. मेघ पर मेघ घेरले बा	50
17. कहाँ बा प्रकाश, अरे प्रकाश कहाँ बा!	51

18. आज सावन-घन के गहन छाँह में 54

19. आसाढ़ के साँझ घिर आइल 56

20. आज के झंझा रात में तहरा संग अभिसार 58

21. हम जानऽ तानी कि तू 59

22. तु कइसन गीत गावे लऽ हे, गुणी ! 61

23. अइसे ओट में छिप के चल गइला से, ना होई 63

24. प्रभु, यदि इ जीवन में तहार दर्शन ना पा सकीं 65

25. हम निरन्तर तहार विरह के देख रहल बानी 68

26. अब समय नइखे, छाया धरती पर उतर आइल 70

27. आजु पानी झर-झर बरस रहल बा 72

28. प्रभु, तहरे खातिर आँख जाग रहल बिया 74

29. धन जन से भरल बानी, ओह 76

30. ई त तहार प्रेम हऽ, हे हृदयहरण 78

31. हम येइजा बानी खाली तहार गीत गावे खातिर 80

32. दूर करऽ हमार भय दूर करऽ 82

33. फेर ई सभ हमार मन घेरे लागल 84

34. हमरा से मिले खातिर तू 85

35. आवऽ आवऽ हे सजल-सघन बादल 87

36. का तू जोग नइखऽ दे सकत ? ई छन्द में 89

37. रात के सपना छूट गइल हो छूट गइल 91

38. ई शरद रितु में प्राण के दुआर पर 93

39. एइजा जवन गीत हम गावे अइनी 95

40. जवना चीज के हेराइए जाए के बा 97

41. मलिन वस्त्र अब छोड़े के होई 99

42. देही हमार पुलकित हो उठल 101

43. हे प्रभु, आज आपन दहिना हाथ 103

44. जगत के आनंद यज्ञ में हमार निमंत्रण आइल 105

45. प्रकाश से प्रकाशमय कइके 106

46. तहार आसान के नीचे माटी पर लेटल रहब 108

47. रूप के सागर में हम डुबकी लगईले बानी 109

48. आसमान के नीचे खिल गइल 111

49. उ आपन गोद के बिछा दिहले 114

50. एकांत प्राण के देवता 117

51. कवना आलोक से प्राण के दीया 118

52. तू हमार आपन हवऽ,तू हमरा संगही बाड़ऽ 120

53. उतारऽ उतारऽ तू हमरा के 122

54. आजु गंध विधुर हवा में 124

55. आजु बसंत जागृत भइल दुआर पर 126

56. आपन सिंहासन के आसन से तू उतर अइलऽ 128

57. हे नाथ ! तू अब हमरा के अपना लऽ, अपना लऽ 130

58. जीवन जब सूख जाए 132

59. अब मौन कर द – हे प्रभु 134

60. संसार जब नींद में डुबल बा 136

61. उ त पास आ के बइठल रहे 138

62. सुनला हा ना का, उनकर पग के ध्वनि 140

63. मान लिहनि हम आपन हार, टाले के जतना कोसिस कइनी 141

64. एक-एक कइके आपन खोलऽ पुरान का तार 143

65. जाने कब हम बाहर निकल नी गीत तहार गावतानी 145

66. तहार प्रेम के थाम सकीं अतना सामर्थ्य नइखे 147

67. सुन्दर, तू आइल रहल आज भोर में 150

68. हमार खेल जब तहरा संगे होत रहे 152

69. देख हो उ नाव खोल दिहले 154

70. चित्त हमार खो गइल बा आज 156

71. हे मौन, यदि कुछ ना कहबऽ 158

72. जतना बार दीप जलावल चाह तानी 160

73. सभ के नजर से बचा तहरा के 162

74. पत्थर में बाजे तहार बंसी 163

75. आपन दया से हमार जीवन के 165
76. सभा जब भंग होई तब 166
77. चिर-जन्म के वेदना 168
78. जब तू गीत गावे के कहेलऽ 170
79. प्रवाहित होखो हमार समूचा प्रेम 172
80. हमरा घरे उ दिन में आइल रहले हा 174
81. उ वसूल ले लन राही में ही 175
82. ई अजोरिया रात में प्राण हमार जागऽता 177
83. बात इहे रहे कि एक ही नाव में हम-तु जाइब जा 179
84. आपन एकान्त घर के देवाल तुरि के 181
85. अब ना लौटऽब येह तरी 183
86. हमरा के यदि आज जगइलऽ नाथ 185
87. हमरा के तुर लऽ, तुर लऽ 187
88. चाहिना हम तहरे के चाहिना 189
89. हमार ई प्रेम ना त भीरु बा 190
90. अउर आघात सह लेब हम 192
91. ई अच्छा कईल निठुर 194
92. देवता जानि के दूरे खड़ा रहनी 196
93. तू जवन काम करऽ तारऽ 198

94. विश्व से जुड़ी के जहाँ करे लऽ विहार 200

95. बोला लऽ, हे प्रभु !बोला लऽ हमरा के 201

96. तहार लूट हो रहल बा भवन में जहाँ 202

97. जइसे फुल खिले ला अपने आप 203

98. तहरे ओर हमार रहो मुंह 205

99. फेर आइल आषाढ़ आसमान में छा गइल 206

100. आज बरखा के रूप जन मानस के बीच 208

101. हे हमार देवता! ये देह में भर के प्राण 210

102. इहे साध बा हमार कि येह जीवन में 212

103. अकेले हम बाहर निकलनी 214

104. हम सभकरा ओर तीकवऽ तानी 216

105. अब अपना माथा पर अपना के ढोवब ना 218

106. हे हमार चित्त, पुण्य तीर्थ में जागऽ हो धीरे— 220

107. जहाँ रहेलें सबसे अधम दीन से भी दीन 226

108. हे हमार अभागा देश! 228

109. छोड़ऽ मत, पकड़े रह कस के 232

110. हमार ह्रदय तहरे भाव से भरल बा 234

111. गर्व कइके लिहनी ना उ नाम 236

112. के कहे ला सभ फेंक दिहऽ 238

113. नदी पार के ई आषाढ़ के ई भोर 240

114. मउत जवना दिन, साँझ में 242

116. हे हमार येह जीवन के शेष परिपूर्णता 245

117. अरे हम तऽ एगो यात्री हई हो 247

118. फहरा के झंडा गगन भेदी रथ पर 250

119. भजन-पूजन, साधना-आराधना 252

120. सीमा में, असीम, तु बजावे ल आपन सुर 254

121. तबे तहार आनन्द बा हमरा पर 256

123. प्रभु के घर से आइल रहे जवना दिन 258

124. सोचले रहनी मन में, जहाँ होखे के रहे ओईजे 260

125. हमार इ गीत आपन सभ अलंकार 262

126. निन्दा, दुःख, अपमान से 263

127. राजा जइसन भेस में तु सजावे लऽ 265

128. उलझ गइल पतरका-मोटका दुनों तार 267

129. गावे लायक भइल ना कवनो गान 269

130. हमरा में तहार लीला होई 271

131. दुःस्वप्न कहाँ से आ के 272

132. गीत के द्वारा तहरा के खोजी ना बाहर, मन में 274

133. तहरा के खोजल खतम ना होई हमार 276

134. हमार अंतिम गीत में भर जाउ 278

135. जब हमरा के बाँधे लऽ आगे-पीछे 280

136. जतना दिन तू शिशु के जईसन 282

137. हमार चित्त तहरा में नित्य होई 284

138. तहरा के आपन प्रभु बना के रख सकीं 286

139. जवन दिहल तु इ प्राण के भर के 288

140. अरे माझी, अरे हमार 290

141. मन के, आपन काया के 292

142. जाये के दिन ई बात कही के ही जाईं 294

143. अपना नाम से ढाँकी के राखी ना जेकरा के 296

144. नाम जवना दिन मिटा देबऽ, नाथ, 298

145. लिपटल बा सब बाधा, छोड़ावल चाहतानी 300

146. तहार दया जदि ना भी जानी माँगे 302

147. जीवन में जतना पूजा पूरा ना भइल 304

148. एगो नमस्कार से, प्रभु 306

149. जीवन में जवन चिरदिन* रह गईल आभास में, 308

150. तहरा से हमार नित्य विरोध 311

151. प्रेम के हाथे पकड़ा जाइ येही से बइठल बानी हम 313

152. संसार में हमरा के अन्य जे भी प्यार करे ला 315

153. प्रेम के दूत के भेजबऽ कब, नाथ— 317

154. गीत गवईल तु हमरा से 319

155. सोचीना अब इहवे शेष— 321

156. शेष में ही बा अशेष 323

157. दिन जदि ढल गइल होखो 325

आपन बात

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर (टैगोर) के विश्व प्रसिद्ध रचना गीतांजलि के इ भोजपुरी अनुवाद हऽ। ई अनुवाद दू गो स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो रहल बा। पहिला पुस्तक में 103 गीत-कविता के अनुवाद बा। एही गीतांजलि **'सॉंग ऑफ़ ऑफ़रिंग्स'** के साल 1913 में साहित्य के नोबेल सम्मान मिलल रहे। दूसरा पुस्तक में 157 गीत-कविता बा। इहे मूल भाषा बांग्ला में साल 1910 में 'गीतांजलि' नाम से प्रकाशित भइल रहे। एह मूल गीतांजलि में से 53 गीत आ कविता, अंग्रेजी में अनूदित गीतांजलि में, स्वयं गुरुदेव टैगोर के द्वारा चयनित भइल रहे। इ दूनों अनुवाद कार्य के हम अपना जीवन के अंतिम पड़ाव तक पूरा कऽ लेबे के भाव आ संकल्प (2015) के साथ धीरे ही धीरे आगे बढ़े के सोचले रहनी। लेकिन कोरोना महामारी (2020) के चलते हमार सोच में बदलाव आइल। एक साँझ (बइसाख, 2021) जीवन मृत्यु के महामोह में हमहूँ पड़ गइनी। तीन रात के भयावह संशय, सम्मोहन और विरक्ति के दौरान जवन एक मात्र महाग्रंथ हमरा के तिनका भर सहारा दिहलस उ इहे रहे— बांग्ला गीतांजलि।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मालवीय भवन में होखे वाला (साल 1999-2001 के दौरान) साप्ताहिक गीता प्रवचन के हम नियमित श्रोता रहनी। साल 2021 के बइसाख महीना में भारतीय संस्कृति के महानतम दर्शन-ज्योति गीता के

काव्यात्मक साक्षात्कार; हमरा फेर से गीतांजलि में भइल। संयोग से इहे उ महीना रहे जवना में कविगुरु गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, आपन ख़राब स्वास्थ्य के बीच, आपन मूल बांग्ला गीतांजलि आ अन्य कई गो कविता संग्रह में से कुल 103 कविता आ गीतन के अंग्रेज़ी में अनुवाद कइले — 'Song of offerings' नाम से। एही कृति के 13 नवम्बर, 1913 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कइल गइल। पूरे एशिया आ यूरोप में इ खबर एगो आश्चर्य, रोमांच आ कौतुक बन के फइलल। भारतीय उप महाद्वीप के जगमग आकाश में मानऽ एगो अलगे सितारा के दर्शन भइल। ब्रिटिश साम्राज्य आ अंग्रेजी साहित्य के वर्चस्व के दौर में, एगो भारतीय भाषा बांग्ला के कवि के विश्व के सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित होखल, एक अद्भुत आ ऐतिहासिक बात सदा खातिर स्थापित हो गइल।

गुरुदेव आपना भतीजी के लिखल एगो पत्र में आपन मन के बात एह संदर्भ में बहुत साफ़ आ शिशु जइसन मासूमियत के साथ लिखले बाड़े— "तु गीतांजलि के अंग्रेजी अनुवाद के बारे में पूछले बाडू कि हम कइसे कइनी। आ इ लोगन के कइसे अतना अच्छा लगल। इ बात त हमु आज तक ना समझ पइनी। अंग्रेजी हम ना जानीना — इ बात स्पष्ट बा। इ बात हमरा खातिर कभी कवनो लज्जा के विषय भी नइखे रहल। यदि हमरा के केहु चाय पर निमंत्रण भी अंग्रेजी में लिख के भेजे तऽ हमरा मन के भीतर ओकर उत्तर भेजे के हिम्मत ना होखे। तु समझत होखबु कि अब उ माया दूर हो